Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Vol. 13, Issue 1 | May 2025 - October 2025 | pp. 33-37

पंडिता रमाबाई का महिला सशक्तिकरण में योगदान

डॉ. सुनीता गोयल

आचार्य, राजनीति विज्ञान
राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर (राजस्थान)

शोध सारांश

पंडिता रमाबाई (1858-1922) प्रसिद्ध महिला समाज सुधारक, विदुषी, कवयित्री, अध्येता, लेखिका और संस्कृत की प्रकांड पंडित थीं। इन्होंने महिलाओं की शिक्षा सशक्तिकरण एवं उत्थान के लिए धार्मिक, सामाजिक और शैक्षिक तीनों स्तरों पर अथक प्रयास किए, और इसके लिए 'शारदा सदन', 'महिला आर्य समाज', 'रमाबाई एसोसिएशन' और 'मुक्ति मिशन' जैसे संगठन स्थापित किए। रमाबाई का मानना था कि शिक्षा एवं आत्मनिर्णय के अधिकार से ही महिलाएँ सशक्त होगी। महिलाओं को जागृत करने के लिए उन्होंने विभिन्न पुस्तकें लिखी। "द हाई कास्ट हिंदू वूमेन" पुस्तक के माध्यम से रूढ़िवादी पितृसत्तात्मक समाज की कठोर वास्तविकता से समाज को अवगत कराया। उन्होंने समाज में व्याप्त रूढ़िवाद, बाल विवाह, अशिक्षा, विधवा उत्पीड़न, जाति प्रथा जैसी कुरीतियों के विरुद्ध व्याख्यान दिए, आवाज उठाई, देश-विदेश का दौरा कर महिला सशक्तिकरण के समर्थन में वातावरण तैयार किया। एक संस्कृत विद्वान के रूप में जानी जाने वाली रमाबाई ने पितृसत्तात्मक रूढ़िवादी समाज में महिलाओं और लड़कियों की दयनीय स्थिति से छुटकारा दिलाने के लिए, उन्हें सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए अपना जीवन पीड़ित महिलाओं की सेवा में समर्पित कर दिया। समाज सुधार के कार्यों में उनके योगदान को देखते हुए 1919 में ब्रिटिश सरकार द्वारा रमाबाई को 'कैसर-ए-हिंद' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनका यह संदेश कि सशक्तिकरण केवल अधिकार प्राप्ति ही नहीं बल्कि आत्मविश्वास और स्वाभिमान की भी पुनर्स्थापना है आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उस समय था।

संकेताक्षर—*रमाबाई, सशक्तिकरण, पितृसत्तात्मक, शारदा सदन, आत्मनिर्भर*

प्रस्तावना

19वीं शताब्दी की ऐसी सशक्त महिलाएँ जिन्होंने अपनी हिम्मत से न सिर्फ अपनी राह बनाई बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी रास्ता बनाया ऐसी ही महिलाओं में असाधारण प्रतिभा की स्वामिनी प्रख्यात विदुषी रमाबाई का नाम भी शामिल है। रमा बाई एक नारीवादी महिला, समाज सुधारक, महिला अधिकार कार्यकर्ता थी। एक विदुषी के रूप में रमाबाई की ख्याति पूरे देश और विश्व में फैली हुई थी। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा एवं सशक्तिकरण के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। रमाबाई ने उपेक्षित महिलाओं के उत्थान का बीड़ा उठाया। उन्होंने पितृसत्तात्मक सिद्धांतों द्वारा निर्मित की गई सीमाओं के भीतर महिलाओं के अधिकारों को सीमित करने वाले हर पारंपरिक तरीके को चुनौती दी।

प्रारंभिक जीवन

रमाबाई का जन्म 23 अप्रैल, 1858 को मराठी ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उस समय महिलाओं का वेदाध्ययन वर्जित था। रमाबाई के पिता ने न केवल रमाबाई की माता लक्ष्मी बाई को लोगों के विरोध के बावजूद भी संस्कृत की शिक्षा में पारंगत किया बल्कि उन्होंने रमाबाई को भी संस्कृत की शिक्षा में विशेष रूप से प्रवीण किया। उस समय स्त्रियों के लिए वर्जित मानी

जाने वाली संस्कृत भाषा में अधिकार प्राप्त कर, रमाबाई ने सबको आश्चर्यचकित कर दिया। वे कहती थी कि स्त्रियों के कंधों पर ही भारतीय संस्कृति के मूल्यों को वहन करने के जिम्मेवारी है।

संस्कृत की अपनी अद्भुत प्रतिभा के कारण उन्हें वैदिक युग की गार्गी, मैत्रैयी की साक्षात मूर्ति माना जाता था। 12 वर्ष की उम्र में ही रमाबाई ने 30000 श्लोक कंठस्थ कर लिए थे।

रमाबाई को मराठी, हिंदी, कन्नड़, बांग्ला, अंग्रेजी आदि भाषाओं की जानकारी थी। 20 वर्ष की आयु में कोलकाता विश्वविद्यालय की परीक्षा के बाद थियोसोफिकल सोसायटी के केशव चंद्र ने उन्हें 1878 में पंडित और सरस्वती की उपाधि से विभूषित किया। संस्कृत भाषा में उन्हें एक बेहद सधी हुई कमान हासिल थी। वेदों और संस्कृत के उनके असाधारण ज्ञान ने विद्वानों को आश्चर्यचकित कर दिया इस उपाधि को धारण करने वाली वे पहली महिला बनी।

1880 में रमाबाई ने गैर ब्राह्मण बंगाली वकील विपिन बिहारी मेधवी से विवाह किया। यह विवाह तत्कालीन समाज के लिए एक आश्चर्य था। क्योंकि यह न केवल अंतर्जातीय था बल्कि अंतरक्षेत्रीय भी था। उस समय के लिहाज से यह किसी भूचाल से कम नहीं था। हालांकि इस शादी के 2 साल बाद ही उनके पति का निधन हो गया, जो अपने पीछे अपनी बेटी को छोड़ गए। ऐसी विषम परिस्थितियों में भी रामबाई टूटने वाली नहीं थीं और महिला सशक्तिकरण की मशाल को जलाए रखा।

आर्य महिला समाज की स्थापना

रमाबाई पुणे चली गईं। जहां उन्होंने 1882 में आर्य महिला समाज की स्थापना की। ईसा मसीह, ब्रह्म समाज और कई हिंदू सुधारकों के आदर्शों से प्रभावित होकर रमाबाई महिला सुधार की दिशा में आगे बढ़ रही थीं। आर्य महिला समाज की शाखाएं कोल्हापुर, पंढरपुर, अहमदनगर और ठाणे में भी खोली गईं। आर्य महिला समाज लड़कियों को शिक्षित करने एवं बाल विवाह के खिलाफ काम करने वाली उच्च जाति की हिंदू महिलाओं का एक संगठन था। यह संगठन महिलाओं को पढ़ाने का काम करता था साथ ही बाल विवाह रोकने का बीड़ा भी उठा रखा था। रमाबाई समाज की वास्तविक प्रगति के लिए आत्मनिर्भरता में विश्वास करती थीं। वे मानती थीं कि महिलाओं को वास्तविक रूप से सशक्त होने के लिए उन्हें आत्मनिर्भर बनना ही पड़ेगा।

रमाबाई एसोसिएशन की स्थापना

1887 रमाबाई एसोसिएशन रमाबाई द्वारा स्थापित एक सामाजिक संगठन है। जो महिलाओं के सशक्तिकरण एवं उत्थान के लिए समर्पित है। यह संगठन शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यावसायिक प्रशिक्षण, स्वावलंबन और सामाजिक कल्याण के माध्यम से महिलाओं को सशक्त करने की दिशा की ओर अग्रसर है। महिलाओं को शिक्षित करने एवं आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में भी यह संगठन अपना कार्य करता है। आर्य महिला समाज जहां उच्च जाति की हिंदू महिलाओं का संगठन था रमाबाई एसोसिएशन निम्न एवं दलित जाति की स्त्रियों को भी सशक्तिकरण की दिशा में आगे बढ़ाने की और कार्य करने वाला संगठन था।

महिला शिक्षा से सशक्तिकरण की दिशा में प्रयास

महिला के स्वतंत्र अस्तित्व के लिए रमाबाई ने महिला शिक्षा की बहुत वकालत की। अपने ज्ञान, विशेषज्ञता, ऊर्जा को सकारात्मक दिशा में लगाने का एक ही माध्यम है शिक्षा। स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन करने का एक ही रास्ता है वह है शिक्षा। रमाबाई जानती थीं कि शिक्षा जीवन में नई संभावनाओं के द्वार खोलती है। शिक्षा रूपी धन को कोई नहीं छीन सकता है। शिक्षा से हमारी अंतर दृष्टि खुलती है। जिसकी रोशनी से हम चीजों को सही अर्थ में समझ सकते हैं। अपना आत्मविश्वास जगाने के लिए भी शिक्षा हासिल करना बेहद जरूरी है। शिक्षा के माध्यम से ही स्त्रियाँ समाज में सम्मानजनक स्थान बना सकती हैं। शिक्षा के महत्व को जानते हुए रमाबाई ने कोलकाता में एक स्कूल भी खोला। इसका लक्ष्य था हर स्त्री अपने लिए और दूसरी स्त्री के लिए अध्ययन करें तो बदलाव आ सकता है।

रमाबाई ने सरकार द्वारा गठित हंटर कमीशन और एजुकेशन इन इंडिया के समक्ष स्त्री शिक्षा के लिए अपने प्रमाण प्रस्तुत किए। उन्होंने हंटर कमीशन को सुझाव दिया कि महिलाओं की शिक्षा के लिए उन्हें विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए। महिला स्कूल निरीक्षकों की नियुक्ति भी की जानी चाहिए। भारतीय महिलाओं को मेडिकल शिक्षा के लिए मेडिकल कॉलेज में प्रवेश दिया जाना चाहिए। रमाबाई के प्रमाण ने बहुत सनसनी मचाई। भारतीय महिलाओं को न केवल पढ़ने लिखने की आवश्यकता है, बल्कि उन्हें डॉक्टर और इंजीनियर बनने की

भी आवश्यकता है। यह वह दौर था जब महिलाओं को घर से बाहर भी नहीं भेजा जाता था ऐसे समय में महिलाओं के न केवल पढ़ने लिखने की बात करना बल्कि उन्हें डॉक्टर और इंजीनियर बनने की वकालत करना बहुत बड़ी बात थी। रमाबाई के महिला शिक्षा की वकालत के विचार इंग्लैंड की महारानी विक्टोरिया तक भी पहुँचे।

रमाबाई के मेडिकल शिक्षा में योगदान के फलस्वरूप महिला चिकित्सा आंदोलन एवं शिक्षा में सुधार हुए। रमाबाई के सुझाव पर लॉर्ड डफरिंग के समय विशेष ध्यान दिया गया और 1886 में आनंदी बेन जोशी भारत की पहली महिला डॉक्टर बनी। जो की रमाबाई की चचेरी बहन थी। अमेरिका में आनंदीबेन जोशी के स्नातक समारोह में रमाबाई को विशिष्ट अतिथि के रूप में भी आमंत्रित किया गया था। इसके एक साल बाद सितंबर 1887 में अमेरिकन रमाबाई संगठन का गठन उनके प्रशंसकों ने किया। 1883 से 1886 तक रमाबाई एक एंग्लो कैथोलिक के रूप में सामाजिक सुधार और शिक्षा पर व्याख्यान देती रही।

शारदा सदन की स्थापना

1889 मे रमाबाई भारत लौटी और एक महीने के भीतर उन्होंने अपनी 20 लड़कियों के साथ मुंबई में 11 मार्च 1889 को शारदा सदन की शुरुआत की। इस सदन को हिंदू सुधारकों का समर्थन प्राप्त था। यह सदन परित्यक्त और घरेलू शोषण एवं हिंसा की शिकार महिलाओं के लिए एक सुरक्षित आश्रय स्थल था। इस सदन के अंतर्गत महिलाओं को पढ़ना, लिखना, इतिहास, पर्यावरण, आत्मनिर्भरता से जुड़ी हुई जानकारी एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण भी दिया जाता था। इस सदन के द्वारा महिलाओं को आर्थिक सुरक्षा का आश्वासन एवं आजीविका के लिए सामाजिक स्वीकृति भी प्रदान की जाती थी। 1889 में पुणे में जब अकाल की स्थिति उत्पन्न हुई तो सरकार ने शारदा सदन में निवास करने वाले लोगों की संख्या पर एक सीमा लगा दी। दूसरी और इसाई धर्म के प्रति उनकी आस्था के चलते उनका विरोध भी होने लगा था। इस कारण से रमाबाई ने पुणे के पास केड गांव में 100 एकड़ जमीन खरीदी और नया नाम रखा मुक्ति मिशन। इसमें स्कूल जाने वाली लड़कियों और बच्चों को आवास प्रदान किया गया। रमाबाई ने देखा कि महिलाओं के पास ना जमीन है ना जायदाद है ना रुपया है ना पैसा है और न ही शिक्षा है और यदि वह शिक्षा प्राप्त करना चाहती भी है तो उन्हें पुरुष संबंधियों पर निर्भर रहना पड़ता है। इस स्थिति को दूर करने के लिए उन्होंने आश्रम में ही महिलाओं को आत्मनिर्भर करने की वैकल्पिक व्यवस्थाओं को स्थापित किया। इस मिशन में शिक्षा, औद्योगिक प्रशिक्षण, मुद्रण, बढई गिरी सिलाई, लकड़ी काटना, बुनाई, चेन्नई कशीदाकारी के साथ-साथ खेती और बागवानी जैसे काम सीखा कर महिलाओं को आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ाने के लिए प्रशिक्षित किया जाता था। मुंबई में भी शारदा सदन या शिक्षा का घर स्थापित किया गया। रमाबाई ने भारत के गांव-गांव में रमाबाई संगठन का गठन किया। 1896 में भयंकर अकाल के दौरान रमाबाई ने बैलगाड़ियों से गांव गांव दौरा किया। बेसहारा बच्चों, बाल विधवाओं बेसहारा महिलाओं को मुक्ति और शारदा सदन के आश्रम में पहुंचाया। 1900 तक मुक्ति मिशन में 1500 से ज्यादा लोग थे। पंडिता रमाबाई मुक्ति मिशन आज भी सक्रिय है जो विधवाओं, अनाथों बेसहारा, दृष्टिबाधित लोगों को आवास, शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करने में अपना योगदान देता है।

सामाजिक कुरीतियो का सशक्त विरोध

पितृसत्तात्मक व्यवस्था की कठोर आलोचक समाज सुधारक, विदुषी पंडित रमाबाई ने भारत और विदेशों में बड़े पैमाने पर बाल विवाह, विधवा पेंशन और महिलाओं के विरुद्ध सामाजिक अन्याय के विरुद्ध लड़ाई लड़ी। रमाबाई का जीवन दुनिया भर में भारतीय सामाजिक कार्यकर्ताओं को प्रेरित करता है। तीर्थ स्थलों पर भी रमाबाई स्त्रियों को जाग्रत करती थीं क्योंकि रमाबाई ने तीर्थ स्थलों पर स्त्रियों को बेटे प्राप्त करने के लिए सर पटकते हुए देखा था। रमाबाई ने1882 में ही अपनी पहली पुस्तक" मूल मराठी में "स्त्री धर्म नीति" प्रकाशित की थी इस पुस्तक में महिलाओं के नैतिक कर्तव्यों की विस्तृत विवेचना की गई है।

रमाबाई ने जाति को हिंदू समाज का एक महान दोष और लोकतांत्रिक विकास में प्रमुख बाधा माना। उस समय वह स्वयं एक उच्च जाति की ब्राह्मण परिवार की होकर निम्न जाति में अंतरजातीय विवाह किया जिसके कारण उनकी काफी आलोचना हुई। हालांकि उनके इस कार्य को ज्योतिबा फुले और उनकी पत्नी सरस्वती फूले का सहयोग प्राप्त हुआ था।

लेखनी से सशक्तिकरण

रमाबाई की पहली पुस्तक स्त्री धर्म नीति (मोरल फॉर वुमेन 1882) में प्रकाशित की। इसकी कमाई को उन्होंने महिलाओं के उत्थान में लगाया। 1883 में इस पुस्तक की बिक्री से

होने वाली कमाई से चिकित्सा प्रशिक्षण शुरू करवाने के लिए इंग्लैंड गईं।

अंग्रेजी में पहली पुस्तक "दि हाई कास्ट हिंदू वुमेन" का 1887 प्रकाशन किया, जो हिंदू विधवाओं की दुर्दशा एवं उनके साथ होने वाले दुर्व्यवहार पर आधारित थी। साथ ही इस पुस्तक में बाल विवाह, सती प्रथा, जाति व्यवस्था, बाल वधुओं बाल विधवाओं एवं हिंदू महिलाओं के जीवन के काले पहलुओं एवं उत्पीड़न को विशेष रूप से महाराष्ट्र के सीमा क्षेत्र में ब्राह्मणवादी पितृसत्ता पर प्रकाश डाला गया। रमाबाई ने कई प्रभावशाली रचनाएं लिखी। जैसे द टेस्टिमोनी ऑफ़ एन इंडियन वूमेन, "पंडित रमाबाई अमेरिकन एनकाउंटर द पीपल्स ऑफ़ द यूनाइटेड स्टेट्स, 1889"। इन रचनाओं के माध्यम से रमाबाई ने भारतीय समाज में महिलाओं की दुर्दशा को न सिर्फ सामने लाया बल्कि उनकी मुक्ति और सशक्तिकरण के लिए भी अथक प्रयास किए। रमाबाई अपनी लेखनी एवं व्याख्यानों के माध्यम से विधवाओं की दशा सुधारने का बीड़ा उठाया अपने संस्कृत ज्ञान और दमदार भाषणों अकाट्य तर्कों परमाणों से बंगाल के समाज में हलचल मचा दी।

विवेकानंद से टक्कर

1886 में रमाबाई अमेरिका गईं। विवेकानंद ने 1893 में शिकागो विश्व धर्म सम्मेलन में हिंदू धर्म के महान पक्ष को रखा। वहां रमाबाई के साथ कुछ महिलाओं ने इसके खिलाफ प्रदर्शन किया और सवाल उठाया कि अगर उनका धर्म इतना महान है तो महिलाओं की स्थिति इतनी खराब क्यों है? रमाबाई ने लिखा कि मैं अपनी पश्चिम की बहनों से गुजारिश करती हूं कि वह बाहर से संतुष्ट न हो बल्कि महान दर्शन की बौद्धिक विमर्श और प्राचीनता के नीचे काली गहरी कोठियाँ है इनमें महिलाओं और नीची जातियों का शोषण चलता है, उस पर भी विचार करें। विवेकानंद ने अपने पत्र में लिखा था की मैं बहुत आश्चर्यचकित हूं कि रमाबाई का सर्किल मेरी आलोचना कर रहा है।

लेखन और भाषण को अपनी आय का स्रोत बनाना

अपने लेखन और भाषण को उन्होंने अपनी आय का स्रोत बनाया। जो की भारत के इतिहास में एक नई युग की शुरुआत करता है। इसको व्यवस्थित रूप से किसी भी भारतीय स्त्री ने पहले नहीं आजमाया था। रमाबाई की पहली किताब की बिक्री से अपनी विदेश यात्रा के खर्च का एक बड़ा हिस्सा निकाला था। अमेरिका में भाषण के जरिए उन्होंने लाखों रुपए चंदे के रूप में इकट्ठे किए। रमाबाई संगठन की शाखाएं खोलने के लिए अमेरिका के छोटे बड़े कई शहरों में उन्होंने लगातार यात्राएँ की। उन्होंने लड़कियों के लिए अमेरिकी बेल पद्धति से सचित्र प्राइमर बनवाएं। प्रार्थना एवं भजन लिखे। देश-विदेश की कई पत्रिकाओं और अखबारों में लेख लिखें। समकालीन विद्वानों से तर्क वितर्क करते हुए टिप्पणियाँ भी लिखी। यही उनकी आजीविका का साधन था। पुस्तक और व्याख्यानों से प्राप्त आय से रमाबाई ने 1889 में मुंबई में "शारदा सदन शिक्षक ग्रह" की स्थापना की।

रमाबाई एक दुर्लभ ब्राह्मण थी जिन्होंने अपनी जाति के बाहर विवाह किया। वह एक ऐसी दुर्लभ विधवा थी जिन्होंने रीति-रिवाज को चुनौती दी। वह एक दुर्लभ भारतीय महिला थी जिन्होंने ईसाई धर्म को ग्रहण किया। रमाबाई का मुक्ति मिशन आज भी सक्रिय है महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में आगे बढ़ा रहा है। रमाबाई ने दिखा दिया कि अगर दृढ़ निश्चय हो तो व्यक्ति गरीबी अभाव दुर्दशा अन्याय पर विजय प्राप्त करके अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। रमाबाई की सफलता का रहस्य था प्रतिकूल परिस्थितियों में भी संघर्ष करते रहना। महिला सशक्तिकरण की मशाल जलाकर 5 अप्रैल 1922 में मुंबई में पंडित रमाबाई का देहांत तो हो गया। लेकिन वह अमर हो गई उनकी मृत्यु से कुछ समय पहले ही ब्रिटिश सरकार ने 1919 में रमाबाई को केसरी पदक से सम्मानित किया। रमाबाई के कार्य को पूरी दुनिया में तारीफ मिली और उनके नाम पर शुक्र ग्रह के एक तारे का नाम भी रखा गया। यूरोप के चर्च 5 अप्रैल को उनकी याद में फीस्ट डे के तौर पर मनाते हैं। भारत सरकार ने भी रमाबाई के नाम पर एक स्मारक डाक टिकट जारी किया था। प्रोफेसर शेफाली चंद्र ने कहा है यह एक ऐसी महिला थी जिन्होंने 1870 में पूरी दुनिया का भ्रमण किया। विदेशों में खानपान पोशाक और भाषा की चुनौतियों का सामना करते हुए महिला सशक्तिकरण एवं महिला उत्थान में अपना अतुलनीय योगदान दिया।

निष्कर्ष

पंडिता रमाबाई भारतीय नारी आंदोलन की प्रथम वैचारिक, व्यावहारिक मार्गदर्शक मानी जाती है। जिन्होंने नारी मुक्ति

का केवल विचार ही नहीं दिया बल्कि इसे अपने जीवन का ध्येय बनाया। पंडिता रमाबाई ने ऐसे युग में नारी चेतना का शंखनाद किया जहां महिलाओं की आवाज को दबा दिया जाता था उस समय अधिकारों की बात करना एक साहसिक कार्य था। उन्होंने भारतीय समाज में स्त्रियों को नई पहचान दी जो शिक्षित हो, स्वतंत्र हो, और आत्म निर्भर हो। उन्होंने अशिक्षा, अन्याय, अत्याचार, उत्पीड़न के विरुद्ध संघर्ष किया और स्त्रियों को सामाजिक आर्थिक मानसिक सामाजिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कदम उठाएं। उन्होंने सिर्फ अधिकारों की ही बात नहीं की बल्कि शिक्षा, नैतिकता, आत्म सम्मान, सामाजिक चेतना, आत्मनिर्भरता इन सभी को नारी सशक्तिकरण का आवश्यक तत्व माना।

पंडित रमाबाई ने भारतीय महिलाओं की स्थिति को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी उजागर किया उन्होंने विश्व के कई देशों में अपने व्याख्यानों के माध्यम से भारतीय नारी की समस्याओं पर अंतर्राष्ट्रीय विमर्श शुरू किया। आधुनिक भारतीय महिला सशक्तिकरण संबंधी आंदोलनों में, योजनाओं में, नीतियों में कार्यक्रमों में पंडिता रमाबाई के विचारों की स्पष्ट झलक मिलती है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. सेन गुप्ता पद्मिनी, पंडित रमाबाई सरस्वती उनका जीवन और कार्य, एशिया पब्लिशिंग हाउस, मुम्बई, 1970
2. सुजाता विकल, विद्रोहिणी पंडित रमाबाई, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2023
3. चक्रवर्ती, उमा, रीराइटिंग हिस्ट्री : द लाइफ़ एंड टाइम्स ऑफ़ पंडिता रमाबाई, काली फॉर विमेन, नई दिल्ली, 2000
4. फोर्ब्स, जेराल्डिन, विमेन इन मॉडर्न इंडिया, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, कैंब्रिज, 1996
5. डायर, एस. हेलेन, पंडिता रमाबाई की जीवन कहानी, केसीजर प्रकाशन, मोटाना, 2004
6. जयवर्धने, कुमारी, फ़ेमिनिज़्म एंड नेशनलिज़्म इन द थर्ड वर्ल्ड, लंदन : ज़ेड बुक्स, 1986
7. रमाबाई, पंडिता, द हाई-कास्ट हिन्दू वूमन, जे.बी. रॉजर्स, फिलाडेल्फिया, 1887. (हिंदी अनुवाद : हिंदू स्त्री का जीवन, संवाद प्रकाशन, 2006).
8. कुमार, अजय, पंडिता रमाबाई : गौतम बुक सेंटर, नई दिल्ली, 2020.
9. कौशांबी मीरा, महिलाएँ मुक्ति और समानता, पंडित रमाबाई का महिला हित में योगदान, आर्थिक और सामाजिक साप्ताहिक, JSTOR, 1988
10. द लेटर्स एंड कॉरेस्पॉन्डेंस ऑफ़ पंडिता रमाबाई, सम्पादन अमृतलाल बी. शाह, बॉम्बे : एशिया पब्लिशिंग हाउस, मुंबई, 1977